बाल किलकारी

(बिहार बाल भवन का मासिक अखबार)

वर्ष-01, अंक-03

मूल्य-10/-

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

विशेषांक पशु-पक्षी

अगस्त 2015

किलकारी लाल के बहाने से

प्यारे दोस्तो,

मैं गौरैया! वही गौरैया जो कुछ साल पहले तक आपके घर के आँगन में चहका करती थी। जिसकी चहचहाट से आपके दिन की शुरुआत होती थी। हाँ, मैं वही हूँ जिसका समूह कभी बहुत बड़ा हुआ करता था। हम आपके प्रांगण, छत पर दिन भर रहते थे और आप लोग मुझे अपनी मुट्ठी में पकड़ने के लिए अथक प्रयास करते थे। पर मैं आपके हाथ कभी नहीं आती। क्या दिन थे वे भी। नहीं? पर अब वो बचपन की यादें सिर्फ यादें ही रहेंगी। क्योंकि मेरी आबादी दिन–ब–दिन तेजी से घटती जा रही है। मैं हर दिन मर रही हूँ।

कभी हर छत के मुँडेरों पर दिखने वाली हम गौरैया... अब इक्का–दुक्का ही दिखती है। जानते हैं आप सभी... ?कुछ लोगों को मैंने बोलते सुना है कि मैं विलुप्त होने वाली हूँ..... मतलब मेरा कुछ समय में इस दुनिया से नामों निशान मिटने वाला है। पर, मैं इस दुनिया को, आपको, इस नीले आसमान को छोड़कर नहीं जाना चाहती। मुझे आपके और आपके वंशजों के साथ भी खेलना है।

आपको पता है... आज स्थिति ऐसी हो गयी है कि मोबाईल टावरों से निकलने वाली इलेक्ट्रो मैगनेटिक किरणों से मेरे अण्डे इतने कठोर हो जाते हैं कि ये फूटते ही नहीं और मेरे बच्चे इन्हीं के अंदर ही मर जाते हैं। यह हाल सिर्फ मेरा ही नहीं –तोतों, कौओं, गिलहरियों और मैनो का भी है।

इन सबके अण्डे भी इतने कठोर हो गये हैं कि फूटते ही नहीं और उनके बच्चे भी बिना जन्म लिये ही मर जाते है। गिद्ध को भी पॉलिथीन खिला–खिला कर समझो विलुप्त ही कर दिया । अब तो मेरी आँखें तरस जाती हैं उन्हें देखने को।

हाइब्रिड नस्लों की होड़ में न जाने कितने पशु–पक्षियों से उनके खुद के स्वरूप को छीन लिया गया है। हमारे पशुओं को अब दुत्कारा ही नहीं, मारा भी जाता है। अब तो संवेदना ही नहीं बची लोगों के विचारों में। पहले मेरे लिए हर घर में दाना–पानी रखा जाता था। हर घर की पहली और आखिरी रोटी जानवरों को देने के रीत होती थी। पर अब इस तेजी से भागती दुनिया में हम पशु–पक्षियों का ख्याल तो किसी को है ही नहीं । हम पशु–पक्षी हमेशा आपके साथ रहे हैं। पर आज इस जमाने ने हमसे जैसे मुँह मोड़ लिया है उससे हम सारे पशु–पक्षियों को काफी आघात पहुँचा है।

दोस्तो! मैं आपसे बस यही पूछना चाहती हूँ कि बचपन में आपका मन बहलाने वाली गौरैया, कौवा, गिलहरियों का एक दिन आप यूँ ही खो देना चाहते हैं या जिस तरीके से आपने हमारे साथ बचपन गुजारा वो बचपन अपने आगे की पीढ़ियों को भी देना चाहते हैं?

मैं अभी भी आपके साथ हूँ.... पर कब तक? पता नहीं । मैं इंतजार करूँगी आपके जागरूक होने का।

पवन राज
कक्षा– XI

मुख्य आलेख

भाई हमने बहुत है खोया पर थोड़ा है पाया

दोस्तो,

कभी तोता देखा है?वो पिंजरे वाला नहीं। खुले आसामान में उडता तोता । नहीं न। अच्छा चलो बताओ कभी कोयल को गाते देखा है?वो टी.वी. पर नहीं, सच्ची में। नहीं न! अच्छा छोड़ो कछुआ तो देखा ही होगा?वो पटना चिड़ियाघर वाला नहीं, खेतों में चलता हुआ। फिर नहीं। आपने देखा क्या है? अच्छा छोड़ो उदास मत हों मैं आपको ले चलता हूँ गाँव में। अपनी आंखें बंद करो और जोर से बोलो, हे प्रकृति देवता! हमें गाँव का दृश्य बता, जहाँ हो तोता, कोयल, मोर, ना हो ट्रॉफिक का शोर गिली–गिली छू। अब धीरे–धीरे अपनी आँखें खोलो देखो हम आ गए गाँव में।

लगता है कि सुबह का समय है। वो देखो हरे–हरे खेतों के बीच से लाल–लाल सूरज कितना मनोरम लग रहा है। नंगे पाँव खेतों की मेढ़े पर चलना कितना अच्छा लग रहा है। है न! वो देखो क्या है?लगता है कि कुआँ है। चलो–चलो वहाँ। अरे देखो तो कितना गहरा है। तुम सब पीछे हटो मैं पानी निकालता हूँ कुँए से अरे वाह! कितना ठंडा है कुँए का पानी। पीकर देखो सारी प्यास बुझ जाएगी। इसके सामने तो फ्रीज का पानी भी फेल है। चलो अब आगे चलते हैं। वो देखो एक किसान गाय का दूध निकाल रहा है। कितनी सुंदर गाय है। एकदम साफ–सुथरी । देखो तो किसान के बेटे कितने मजे से पी रहे दूध। चलो तुम्हें भी पिलवाता हूँ। बोलो कैसा लगा दूध पीकर। हाँ–हाँ मजा तो आएगा ही, आखिर शुद्ध और ताजा दूध जो पिया है। ये घंटी की आवज कहाँ से आ रही है? चलो देखते हैं। अरे! वो देखो उन दोनों के गले में बंधी घंटी से आ रही है। कितने अच्छे लग रहे हैं दोनों एकदम हीरा–मोती की तरह। लगता है किसान इन्हें लेकर खेत जोतने जा रहा है। चलो हम भी चलते हैं। देखो ! तो कितना सारे खेत हैं। शहर में तो सिर्फ बिल्डिंग ही होते हैं? कितना अच्छा लग रहा है हरे–भरे इन खेतों को देखकर। एकदम शांत वातावरण। अच्छा लगा ना। फिर हाँ क्यों नहीं बोलते ।

देखो! वो रहा मक्के का खेत। एक दम हरा–भरा। पर देखो तो मक्के के खेत में कितने सारे तोते है। चलो उन्हें पकड़ते हैं। जल्दी से दौड़ो। आह ! सारे तोते उड़ गए। एक भी तोता ना पकड़ाया। कितना अच्छा लग रहा है इतने सारे तोतों को उड़ता देखकर। चलो अब आगे चलते हैं। देखो–देखो मैंने उस पेड़ पर क्या देखा। घोंसला है । अरे उस पेड़ पर नहीं बुद्धू उस पेड़ पर । अब दिखा। पर किस चिड़िया का है। ऊपर चढ़कर देखते हैं। अरे ! लगता है ये तो कौए का घोंसला है। दो अंडे भी हैं। अरे जल्दी उतरो कौए ने देख लिया तो अपनी चोंच से मारेगा। कौए से एक बात याद आयी। पता है कोयल अपने अंडे अपने घोंसले में नहीं देती है, कौए के घोंसले में देती है। वह कौए के अंडों को गिरा देती है। कौए उसे अपने अंडे मानकर देखभाल करता है। जब अंडे में से कोयल के बच्चे निकलते है तो कोयल उन्हें ले कर उड़ जाती है। उस पोखर के पास देखो कितने सारे बगुले हैं। सफेद–सफेद। दौड़कर जल्दी चलो। कौन पहले पहुँचता है ? मैं पहले पहुँचा मैं जीता । लगता है सब मछलियों की तालाश में इस पोखर के पास आए हैं। तो देखो उस बगुले ने मछली को पकड़ लिया । उसकी चोंच में देखो बुद्धू।

लगता है कि किसान अपने बैलों के साथ घर लौट रहा है। ओहो गाँव घूमते–घूमते पता भी नहीं चला कि कब शाम हो गयी। देखो तो आसमान पक्षियों से भर गया है। लगता है कि अपने घोसले में लौट रहे हैं। सारा आकाश पक्षियों के कलरव से गूँज रहा है। कितना अच्छा लग रहा है! यह पल। पर अब हमें भी तो घर लौटना है। चलो फिर से आँखें बंद करो, और जोर से बोलो हे प्रकृति देवता! तेरा शुक्रिया, तुमने गाँव का दृश्य दिखा दिया । हो गई रात हमें लग रहा है डर, जल्दी पहुँचा दो हमें अपने घर। कितना अच्छा लगा, गाँव जाकर। मजा आ गया न ! कितने सारे पक्षी मिले, है न। हाँ क्यों नहीं कहते । एक अपना शहर देखो। एक भी पक्षी देखने को नहीं मिलता है मिलता भी तो पिंजरे में बंद मायूस पक्षी। दिन भर ट्रैफिक का शोर मचा रहता है। सड़कों पर गायें खुली घूमती रहती हैं? मरियल सा कुत्ता गलियों में पड़ा रहता है। टी.वी. पर सभी जानवरों के चित्र आते है। पर वो मजा नहीं जो सच्ची में देखने में मिलता है। पहले की बैलगाड़ी से आज के रॉकेट के जमाने तक हमने खूब विकास किया है पर बहुत कुछ गवाँ भी दिया है। जानवरों से हमारी यारी–दोस्ती नहीं रही। कभी हमें अपना साथी मान हमारे पीछे–पीछे कुत्ते बहुत दूर चले आते थे पर अब काटने को दौड़ते हैं। घर के आँगन मे फुदकने वाली गौरैया नजर ही नहीं आती । बचपन का असली मजा पशु–पक्षियों के साथ ही आता है पर आज का बचपन मोबाईल पर एंग्री बर्ड खेलने पर विलीन हो रहा है। न जाने हमें क्या हो गया है?फिर पहले जैसे चिड़ियों के झुण्ड कब आएँगे और हम उनके पीछे दौड़ पड़ेंगे । मुझे तो पता नहीं? क्या आपको पता है ?

–सुधाकर रवि

विशेष कविता

हाथी का ब्याह

हाथी ने है ब्याह रचाया
दुल्हन हथिनी के घर आया
भालू, गैंडा, बन्दर, सूअर,
जुड़े बराती गाड़ी लेकर
कोट–पैंट बाँधे नेक टाई
बाहर आए हाथी भाई
सेहरा बाँधा ऊँट लला ने
बाँधी पगड़ी जिराफ चचा ने
ढोल बजाया भालू ने
दिखाया नाच बन्दरिया ने
घोड़े को जब हाँक लगाई
बैठाओ दूल्हे को भाई
देख के मोटा–तगड़ा दूल्हा
घोड़े का दिल धक्–धक् बोला
भैया गदहे जल्दी आओ
कोई टैंक ढूँढ़ कर लाओ।

– उर्मि कृष्ण

माथापच्ची

एक व्यक्ति के पास कुल उन्नीस पशु हैं। भैंस पाँच सेर, गाय दो सेर और बकरी एक पाव दूध देती हैं। कुल चालीस सेर दूध प्राप्त होता है। जरा बताइए व्यक्ति के पास भैंस, गाय और बकरी की कितनी–कितनी संख्या है?

कहानी

गौरैया के अंडे

"नट्टू भालू, तुमने फिर मेरे अंडे फोड़ दिए। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? तुम बार–बार मेरे अंडे क्यों फोड़ देते हो?" चुन्नू गौरैया रोते हुए बोली। तभी उधर से कल्लू कौआ भी बोला –"हाँ, हम तो बड़ी मुश्किल से घने पेड़ रहने के लिए ढूँढते हैं और तुम बार–बार हमारे अंडे फोड़ देते हो। मैं अभी जाकर तुम्हारे पापा से कहता हूँ।" कल्लू कौआ उदास होकर बोला। नट्टू भालू जोर से हँसा और बोला जाओ–जाओ कह दो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता । कल्लू कौआ ने जाकर नट्टू के पापा को सारी बात बताई। उसके पापा जंपू भालू ने हँसते हुए कहा– "तो मैं क्या करूँ ? उसे जो करना है करने दो । मैं अपने बेटे से बहुत प्यार करता हूँ और उसे कुछ नहीं बोलूँगा।" कल्लू कौआ वहाँ से उदास होकर चला गया और पक्षियों को सारी बातें बताईं। तभी चुन्नू गौरैया बोली, देखना एक– न –एक दिन भगवान इसे जरूर सजा देंगे। इस बार चुन्नू गौरैया ने फिर से अंडे दिए थे। नट्टू भालू को जब पता चला तो वह अंडे फोड़ने के लिए पेड़ पर चढ़ गया। उस पेड़ पर बहुत–सी टहनियाँ सूख गई थीं। गलती से नट्टू भालू का पैर एक सूखी टहनी पर पड़ा, और वह धड़ाम से नीचे गिर पड़ा। उसके सिर से खून बहने लगा और वह छटपटाने लगा। चुन्नू गौरैया को उसपर दया आ गयी । उसने उसके पापा को जाकर यह बात बताई। उसके पापा दौड़कर आये तो नट्टू के सिर से खून बहते देख रोने लगे । तुरंत उसके लिए जड़ी–बूटी लाने चलें गये। उन्होंने बहुत जगहों पर ढूँढा लेकिन उसे कहीं भी जड़ी –बूटी नहीं मिली। वह उदास होकर लौटा और गौरैया के सामने हाथ जोड़कर बोला कि मेरी मदद करो नहीं तो मेरा बेटा मर जायेगा। तभी चुन्नू गौरैया नीम के कुछ पत्ते तोड़कर जंपू भालू को दिये और बोली इन्हे पीसकर जल्दी से सिर पर लगाओ। जंपू भालू ने वैसा ही किया। थोड़ी देर बाद नट्टू को होश आया । वह अपने पापा के गले लग गया। फिर बोला, "अगर आप मेरे सिर पर जड़ी–बूटी नहीं लगाते तो मैं मर ही जाता।" "मैने नहीं, चुन्नू गौरैया ने तुम्हारी जान बचाई है।" जंपू भालू ने रोते हुए कहा। नट्टू भालू को अपनी गलती पर पछतावा होने लगा। वह चुन्नू गौरैया से हाथ जोड़कर माफी माँगने लगा, और बोला, आज के बाद मैं कभी भी तुम्हारे अंडे नहीं फोड़ूँगा। "चुन्नू गौरैया हँसते हुए बोली", चलो तुम सुधर तो गये । उसके बाद सभी मिल–जुल कर रहने लगे।

– सम्राट समीर, वर्ग– IX

बूझो–बुझौवल

लम्बी पूँछ पीठ पर रेखा,
दो–दो हाथों खाते देखा।

बड़े सवेरे उठती हूँ मैं
सैर गगन की करती हूँ मैं,
आलस–सुस्ती तनिक न करती
हरदम ही कुछ करती हूँ मैं।

तन काला पर कौआ नहीं,
सिर बड़ा है हाथी नहीं,
कमर पतली पर चीता नहीं,
पेड़ पर चढ़ती पर बंदरिया नहीं।

हमने देखा ऐसा बंदर,
जो उछले पानी के अंदर

कहावते

1. हाथी बूले गामे–गाम, जेकर हाथी ओकरे नाम
2. भैंस के आगे बीन बजाए बैठी भैंस पगुराए।
3. धोबी का कुत्ता, न घर का न घाट का
4. अपने घर के पास कुतवो बरियार
5. गेहूँ सूखता है, कौआ टरटराता है
6. जल में रहकर, मगर से बैर
7. बंदर क्या जाने, आदी का स्वाद
8. छूछूंदर के माथे पर चमेली का तेल
9. गिरगिट–सा रंग बदलना
10. अनकर धन भेल झलकौआ छीन लेलक त भेल मुँह कौआ
11. वन का गीदड़, जायेगा किधर
12. मगरमच्छ के आँसू बहाना
13. रामजी के चिरई, रामजी के खेत, खाले चिरई –भर–भर पेट
14. बंदर के हाथ में नरियल
15. खोदा पहाड़ निकली चुहिया
16. अब आया ऊँट पहाड़ के नीचे
17. हाथी चले बाजार, कुत्ता भूके हजार
18. बड़े–बड़े ऊँट देख, तो गद्हा बोला कितना पानी
19. एक चिरई ऐसनी, खुट्टा पर बैसनी
    मुट्ठी–मुट्ठी चाउर फाँके इ चिरईया कैसनी।
20. कुत्ते की दुम होना
21. घर की मुर्गी दाल बराबर
22. भूखा शेर न तिनका खाये
23. घोड़े बेचकर चैन से सोना
24. कानी गाय के अलगे बथान
25. खिसयाई बिल्ली खम्भा नोचे
26. आ बैल मुझे मार
27. नौ सौ चूहे खाकर, बिल्ली चली हज को

खोजबीन

जानवर जुगाली क्यों करते है

दोस्तो! हमलोग भोजन करते हैं, उसके बाद यह भोजन हमारे पेट में पहुँचता है और इसकी पाचन–किया होने लगती है। लेकिन जानते हो, जानवर जैसे– गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊँट आदि ऐसे जानवर हैं जो अपना भोजन – घास, पेड़ों की पत्तियाँ जल्दी –जल्दी खा लेते हैं, और फिर आराम से बैठकर खाए हुए भोजन को दोबारा मुँह में लाकर अच्छे तरीके से चबाते हैं। चबाने की इस प्रकिया को जुगाली करना कहा जाता है। ये जानवर चबाये गए भोजन को फिर पेट में ले जाते है। जहाँ पह पच जाता है। इनके पेट की बनावट बड़ी ही जटिल होती है। इनका पेट चार हिस्सों में बँटा होता है। पहले हिस्से को रूमन, दूसरे को रेटिकुलम, तीसरे को ओमासम और चौथे को ट्रस्टमक कहते हैं। निगला हुआ भोजन सबसे पहले पेट के प्रथम भाग में जाता है। यहाँ पहुँच कर यह निगला हुआ भोजन कुछ रसों द्वारा मुलायम हो जाता है। इस हिस्से में यह जुगाली करने लायक हो जाता है। इसके बाद जानवर अपने किए हुए भोजन को मुँह में वापस लाकर काफी देर तक चबाते रहते हैं। जुगाली करने के बाद यह भोजन पेट के तीसरे भाग में पहुँच जाता है। तीसरे हिस्से में इसमें कुछ पाचक रस और मिल जाते हैं। अंत में इस भाग से पेट के चौथे भाग अमाशय में पचने के लिए भेज दिया जाता है। इस प्रकार भोजन के पाचन की प्रक्रिया पूर्ण हो जाती है। यहाँ यह जान लेना जरूरी है कि ऊँट एक ऐसा जुगाली करने वाला जानवर है, जिसके पेट में तीसरा भाग नहीं होता। गाय, भेंड़, बकरी आदि के ऊपर के जबड़े में दाँत नहीं होते हैं, लेकिन उनके मसूढ़े बहुत सख्त होते हैं। नीचे के जबड़े के दाँतो और ऊपर के जबड़ों के द्वारा ये जानवर अपने भोजन को मुँह में ले जाते हैं।

आनंद

खेल

फिर आ गये न! नये खेल खेलने। सबसे पहले सभी बच्चे गोलाकार घेरे में बैठ जायें। खेल खेलाने वाला भी बच्चों के साथ बैठेगा। एक बच्चे द्वारा खेल इस प्रकार शुरू होगा जैसे–"मैंने देखी काली चिड़िया एक कूहू–कूहू का बोल सुनाती। नाम बताओ क्या है उसका?" इस पंक्ति को सभी बच्चे दुहरायेंगे। खेल खेलाने वाले बच्चे के बगल वाला बच्चा कूहू–कूहू बोलने वाली चिड़िया का नाम बताएगा। फिर वही बच्चा–उपर्युक्त पंक्ति दुहराएगा और बगल वाला बच्चा आवाज के अनुसार पशु–पक्षियों के नाम बतलाएगा। इसी तरह खेल आगे चलता रहेगा, जब तक सभी बच्चों को बोलने का मौका न मिले।

–सुधीर

प्रेरक प्रसंग

एक बार बुद्धदेव भिक्षा माँगते हुए एक कृषक के घर गये। कृषक ने उन्हें देखा तो कहा, "तुम तो हट्टे–कट्टे दिखाई देते हो। जब मैं कृषि करके अपने परिवार का पोषण कर सकता हूँ, तब तुम कृषि करके स्वयं का पेट क्यों नहीं भर सकते?"

इस बार बुद्धदेव बोले, "मैं भी तो कृषि करता हूँ।"

आश्चर्य से कृषक ने पूछा, "मगर तुम्हारे हल, बैल हैं कहाँ?"

बुद्धदेव बोले, मैं कृषि करता हूँ, मगर मेरी खेती आत्मा या हृदय की होती है, जिसमें ज्ञान के हल से श्रद्धा के बीज बोता हूँ और तपस्या के जल का सिंचन करता हूँ, विनय मेरे हल हरिस, विचारशीलता फाल और मेरा मन नरैली है। दिन–रात परिश्रम करता हूँ, जिसमें अमरता की फसल लहलहाती है और बहुत अनाज पैदा होता है। इस पैदावर को मैं सबमें बाँटता फिरता हूँ, फिर भी मेरा भण्डार खाली नहीं होता। यदि तुम अपनी खेती का कुछ हिस्सा मुझे दोगे, तो बदले में मैं कुछ हिस्सा तुम्हें दे दूँगा। क्या तुम्हें यह सौदा पसन्द है?"

बात किसान की समझ में आ गयी । वह उनके चरणों में गिर पड़ा और उसने उन्हें भिक्षा लाकर दे दी।

प्रस्तुति–आकाश

जानवरों का देश

छोड़कर अपना प्रदेश,
गया मैं जानवरों को देश।
जिनका अलग था नजरिया,
अलग था भेस।
कुत्ता चला रहा था कार,
बंदर कर रहे थे व्यापार।
चीता बना था पुलिस,
किया लोमड़ी को गिरफ्तार।
चूहा चला रहा था साइकिल,
कम्प्यूटर चला रही थी भेड़।
बगल में टी.वी. पे भाषण,
दे रहे थे राष्ट्रपति शेर।

युवराज सिंह, वर्ग– V

चिरई, चुनमुन, खुदबुदी

चिरई, चुनमुन खुदबुदी,
आसमान में उड़ी।
आकर बैठी आँगन में,
चुन–चुन खाती खुददी।।
दिन भर फुदकती रहती है,
इस डाली से उस डाली पर।
जब वो थक सी जाती है,
आँखे मूँदे सो जाती है।
चीं–चीं मुझसे बातें करती,
सुनती हूँ उसके मीठी–मीठी स्वर।
मेरे घर का दाना वो,
ले जाती चोंच भरकर।
चिरई, चुनमुन, खुदबुदी,
तू है बड़ी अलबेली।
मेरं संग रहकर तू री,
आओ कर लें अठखेली।

वैष्णवी कुमारी, कक्षाः– VII

कहानी

कंची की गईया

एक गाँव था। उस गाँव में एक परिवार रहता था। परिवार में माता–पिता, दादा–दादी एवं कंची और पुकू दो बहनें रहती थीं। उनके पास एक गईया थी। कंची अपनी गईया को खूब मानती थी। उस रात उसने गईया की खूब अच्छे से देख–भाल की थी। इसलिए कि अगली सुबह गईया माँ बनने वाली थी। कंची पूरी रात जागती रही। उसकी गईया भी सारी रात रम्भाती रही। कितने इंतजार के बाद सुबह हुई, और बाछी भी हुई। अहा! लाली गईया की काली बाछी। बड़ी ही मासूम बड़ी ही निराली। परिवार वालों के चेहरे खुशी से खिल उठे। सबने मिलकर गईया की पूजा की । कंची ने बाछी की खूब देख–भाल की । गईया ने उसे दूध पिलाया बारम्बार बछिया उठने की कोशिश कर रही थी। पर पैरों पर खड़ी नहीं हो पा रही थी। कंची वहीं पास में बैठी हुई थी। वह मुस्कुराती हुई बाछी के पास गई और उसे गोद में उठाकर बोली, अरे, तुम घबराओ मत। तुम धीरे–धीरे चलना शुरू कर ही दोगी। आखिर तुम इतनी प्यारे जो हो । फिर कंची ने उसे उठाकर जमीन पर बिठाया। उसे सहलाने लगी। बाछी भी बड़े प्यार से कंची के पैर चाटने लगी। कुछ दिनों तक यूँ ही चलता रहा। कंची और बाछी का आपस में गहरा ताल–मेल हो गया। हर दिन कंची और उसके परिवार वाले दूध पीते थे। धीरे–धीरे घर में पैसों की कमी होने लगी। दादा जी ने फैसला लिया कि अब उन्हें अपनी गईया बेच देनी चाहिए। इस बात को लेकर कंची बहुत परेशान थी। वैसे तो घर में कोई गया बेचना नहीं चाहती थी। पर मजबूरी थी। उस दिन दादा जी ने गईया को पच्चीस हजार रुपयों में बेच दिया। गईया को बेचे हुए कुछ दिन हो गए। कंची अब बहुत उदास रहने लगी। एक दिन वह चोरी–चुपके अपनी गईया को देखने उस आदमी के घर गई। देखा की गईया की नाद में पॉलथिन भरा कचड़ा पड़ा है। उसके मन में बड़ी उथल–पुथल मचने लगी । हे भगवान! हमारी गईया को पॉलथिन हजम नहीं होता है। अब क्या होगा? हमारी गईया कितनी दुबली–पतली हो गई है। ये लोग जरूर हमारी गईया को ठीक से खाना नहीं खिलाते हैं। हमारी गईया बीमार हो गई है। हम अभी जाकर दादा जी को सारी बात बता देते हैं। कंची दौड़ी–दौड़ी गई, और दादाजी को सारी बाते बतायी। दादाजी बोले–"क्या, तू वहाँ गई थी? तुझे किसने कहा था? हमने अपनी गईया बेच दी है। अब वो गईया उस आदमी की है। अब वो जो चाहे सो करे, और हाँ अबसे वहाँ कोई नहीं जाएगा। कंची बोली हम भी अब से कुछ नहीं खायेंगे ।हमारी गईया हमें चाहिए। कंची ने जिद्द पकड़ ली। सच में उसने न कुछ खाया न कुछ पीया। उसे तो अपनी गईया चाहिए। जब कंची बिना कुछ खाये –पीये बीमार होने लगी। तो दादा जी ने बात मान ली। दादा जी उस आदमी के पास गये। बहुत झगड़ा –झंझट हुआ। सबकी अपनी–अपनी बात थी। पर अंत में मामला सुलझ गया। दादी जी ने उस आदमी को पैसे लौटा दिए और अपनी गईया वापस ले ली ।कंची अब बहुत खुश थी । क्योंकि उसकी गईया उसे वापस मिल गयी थी।

प्रियन्तरा भारती, वर्ग–V

बबलू -बबली के चुटकुले

बबलू के पिता–डॉक्टर साहब, मेरे मुन्ने ने पाँच रुपये के, पाँच सिक्के निगल लिए हैं, आप फौरन निकाल दीजिए।

डॉक्टर – (बबलू से) पैसे कब निगले थे?
पिता – जी, पिछले हफ्ते
डॉक्टर– और आप अब आए हैं।
पिता– जी, उस वक्त पैसों की जरूरत नहीं थी।

ड्राइवर (बबलू से)– भाई साहब! मैं मोटर चालू करना भूल गया हूँ। इसलिए सोच रहा हूँ कि आपसे कितने पैसे लूँ?
बबलू– इसमें परेशान होने की कोई बात नहीं है, मैं भी, अपना पर्स घर पर भूल आया हूँ।

बबलू – (गौरव से), देखो, मैंने तुम्हें अंधेरे में भी खोज निकाला।
बबली– तभी तो तुम्हें मास्टर जी उल्लू कहते हैं।
बबलू– यदि कोई परेशानी आए तो हमें किसके पास जाना चाहिए।

बबली– किसान के पास,
बबलू– वो कैसे?
बबली– क्योंकि उसके पास हल होता है।

शिक्षक–इतनी गंदी लिखावट, कल तुम, अपने पिताजी को बुलाकर लाना।
बबलू– हे भगवान्! मैडम ने कैसे जाना कि, होमवर्क पापा ने किया है।

पक्षियों का दर्द

हवाओं के संग पंख फैलाकर,
उड़ चली जाती हूँ, एक–
आशियाने की तलाश में
दूर देश में हर गली, हर चौराहे पर,
ढूँढ़ती हैं आँखें एक वो जगह
जहाँ तिनके–तिनके जोड़कर
मैंने बनाया था अपना घोंसला
पर मुझे नहीं मिलता
वो फूलों से सजा आँगन,
जिसके खप्परों में मैं।
बसाती थी अपना घर,
अंडों से निकलते मेरे बच्चे ,
जिनके लिए बुनती थी सपने
पर अब , सब टूट चुके हैं
पानी की कुछ बूँदों के लिए,
मेरी निगाहें भटक रही हैं
और मैं तरस रही हूँ,
अपनी जिंदगी के लिए,
अपने भविष्य के लिए।

घुँघरू

कुछ नया करें

चिड़ियों से तो सभी को प्यार होता है। वो चाहे बच्चे हो या बूढ़े या कोई और । सभी चाहते हैं कि उनके आँगन में या छत पर ढेर सारी चिड़िया चीं–चीं करती हुई आएँ, और उनकी दोस्त बनें। तो चलो चिड़ियों को बुलाते हैं अपने आँगन में और दोस्ती करते हैं उनसे। कोई भी अनाज चुनकर उनका छँटना फेकते हैं, उसी छँटन को तुम चिड़ियों को चुगने के लिए छींट दो या जो घर पर खाना बनता है जैसे भात या रोटी आँगन में छींट दो और उनके बगल में मिट्टी के किसी बर्तन में पानी रख कर छोड़ दो। थोड़ी ही देर में देखेंगे कि वहाँ पर कई तरह की चिड़िया दाना चुगेंगी। तुम्हें भी अच्छा लगेगा, और उन चिड़ियों को भी। अब तुम रोज ऐसा ही करो। चिड़िया तुम्हारी दोस्त बन जाएँगी। लेकिन उसे कभी मारना नहीं । बस उसे सिर्फ प्यार देना।

तुलसी लवली
वर्ग– ग्यारहवीं

चिड़िया रानी

आकाश में उड़ जाना री
सुबह–सुबह तुम चिड़िया रानी,
मेरे आँगन में आना री।
पेट भर तुम दाना चुग कर,
फिर से तुम उड़ जाना री।
ले आना तुम संगी–साथी,
पेड़ पर मत चढ़ जाना री।
एक स्वर में मिलकर सब तुम,
हमको गीत सुनाना री।

सौरभ कुमार, वर्ग:–7

नन्हें कलाकार

सुमनी कुमारी, वर्ग–3

मौसम, वर्ग–6

सरिता वर्ग–8

दिव्या, वर्ग–6

[No.G1/Mail/Registration/Renewal/PT-73/2015

सनडायल बनाना सिखाते विशेषज्ञ
प्रसिद्ध खगोलशास्त्री श्री आमिताभ पांडेय

16 बच्चों के साथ एक संवाद में
निदेशक सुश्री ज्योति परिहार

ईद मिलन में कव्वाली गाते बच्चें

सौर ऊर्जा संयत्र प्रणाली
का उद्घाटन

छोटू की समझ

आकाश में काले बादल मँडरा रहे थे। काले बादलों की गरज सुनकर छोटू माँ की गोद में चिपक गया। देखते–देखते जोरों से बारिश होने लगी। छोटू बारिश की टप–टप बूँदों को सहम कर ही, पर गौर से देख रहा था। यह देख उसे आनन्द भी आ रहा था तभी छोटू की माँ निराश होकर बोली,"बिना तरकारी के रोटी खाना पड़ेगा।"ऐसा क्यों माँ? छोटू ने पूछा । उसकी माँ बोली, अरे छोटुआ, न घर में तरकारी है, न अचार है। आज तो नून–रोटी से ही गुजारा करना पड़ेगा। अरी माँ मैं हूँ न! बाजार से हरी सब्जियाँ खरीद आऊँगा! छोटू ने झट् से जवाब दिया। उसकी माँ बोली, छोटुआ अइसा होता तो हम खुद चले जाते। मतलब मैंने समझा नहीं माँ! छोटू ने प्रश्न किया माँ ने यूँ जवाब दिया। "अरे छोटुआ, बरसा के पानी बाजार जाने वाला रास्ता में भर गया है। यह तो बड़का मुसीबत है। अपनी माँ की बातों को सुन छोटू सोचने लगा। कुछ देर बाद वह अचानक बोल उठा, "माँ, आप चिन्ता क्यों कर रही हैं? मैं अभी जाता हूँ और पास के पोखर से कुछ मछलियाँ पकड़कर ले आऊँगा। यह सुनकर उसकी माँ बहुत खुश हुई और बोली, "ठीक से मछलियाँ को पकड़ना । अइसा नही कि पोखर में गिर जाना।"

छोटू ने एक लम्बा–सा डंडा लिया। उसमें डोरे को बाँधकर लोहे की वंशी फँसायी और वह पोखर की ओर निकल पड़ा। छोटू एक वृक्ष के नीचे बैठकर मछलियों को पकड़कर घड़े में रखने लगा।बारिश की वजह से उस कुत्ते को भी कुछ खाने को नहीं मिला था। वह भोजन के तलाश में भटकते–भटकते पोखर के पास आ पहुँचा। छोटू मगन होकर मछलियों को पकड़ने में लगा था। घड़े में मछलियों को रखते देख कुत्ते को लालच आ गया। अब तो ऐसा लगता था की उसके पेट में चूहे कूदने लगे थे। उसी वृक्ष के ऊपर एक कौआ भी बैठा था। मछलियों को देखकर उसकी भी चोंच से पानी टपकने लगा था। तभी शेर की माँद में बैठकर कुत्ता सोच रहा था कि बिना चतुराई से इस घड़े की मछलियों को खाना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है। लगता है मुझे कुछ हटकर सोचना पड़ेगा। तभी उसने सोचा घड़ा तो उसके पीछे की ओर है। और वह आगे की ओर बैठा है। मैं चुपके से घड़े के पास जाऊँगा, और सारी मछलियाँ खाकर भाग निकलूँगा। उसे पता भी नहीं चलेगा। वह धीरे–धीरे घड़े के पास जा पहुँचा, और अपने मुँह से बिना आवाज निकाले मछलियाँ खाने लगा। यह देख कर वृक्ष पर बैठा कौए को बड़ा दुःख हुआ। वह अपने मन ही मन बोला, "बेचारा बालक कितनी मेहनत कर मछलियों को पकड़ रहा है और एक ये है की उसकी मछलियों को मजे से खा रहा है, मुझे तुरन्त ही कुछ करना पड़ेगा। तभी वह काँव–काँव कर चिल्लाने लगा। कौए की आवाज सुन छोटू ने मन ही मन सोचा कि शायद कौए को जोरों से भूख लगी है। इसलिए वह इतना चिल्ला रहा है। कुछ देर बाद फिर उसने सोचा कि आज तक तो कौए को बेवजह चिल्लाते हुए नहीं देखा है। उसके चिल्लाने की वजह तो किसी की आने की खबर लगता है। कुछ न कुछ तो गड़बड़ है। उसने पीछे मुड़कर देखा तो दंग ही रहा गया। "अरे मैं यह क्या देख रहा हूँ?" उसने गुस्सा कर जैसे ही वंशी वाले डण्डे से कुत्ते को मारना चाहा तभी कुत्ता दुम हिलाते हुए भाग निकला। छोटू ने वृक्ष के ऊपर देखा और बोला, मेरे प्यारे दोस्त कौए, तुम्हारी इस समझदारी को देखकर मैं बहुत खुश हूँ। अगर तुम इतना हल्ला नहीं करते तो मुझे पता भी नहीं चलता कि मेरे घड़े की मछलियों को कुत्ता खा रहा है, इतना कहकर उसने घड़े की मछलियों को खाने के लिए कौए को दे दिया, और फिर से छोटू मछलियों को पकड़ने लगा।

मुनटुन राज

निदान रिसोर्स केन्द्र पर किलकारी की गतिविधियों का उद्घाटन एवं प्रशिक्षण

मैं नहीं शैतान

ओ चिरईया आजा री,
डर मत मैं नहीं शैतान ।
खाना दूँगा, पानी दूँगा,
रखूँगा पूरा ही ध्यान।
जब होगी शाम तो,
मेरी छत पर आना री।
चुग के दाने चावल के,
फुर्र–फुर्र उड़ जाना री।
तेरी आजादी ही तो,
है मेरी इच्छा चिरई।
आ जाना हर शाम को,
मैं देखूँगा राह तेरी।
जा इस नील गगन में तू,
उड़ ले अपनी मस्त उड़ान।
ओ चिरईया आजा री,
डर मत, मैं नहीं शैतान।

अभिनंदन गोपाल, वर्ग–8

याद मुझे आती है

नीले–नीले आसमान में,
पक्षी करते मस्ती।
कभी इधर तो कभी उधर,
वो करते हैं मटरगस्ती।
थक जाने पर पक्षी सारे,
पेड़ों पर बैठा करते थे।
बच्चों के संग घोंसले में,
गाते और हँसा करते थे।
दाना–दाना खिला बच्चों को,
उड़ना वो सिखलाते थे।
जब बच्चे होते थे प्यासे,
मीठा जल पिलाते थे।
अपने बच्चों के लिए वे,
हर दुःख कष्ट सह जाते थे।
अब जब मैं देखूँ सूखी ये पेड़,
याद मुझे वे आते हैं।

तरुण कुमार
कक्षाः– VIII

भेजें रचनाएँ

दोस्तो !

'बाल किलकारी अखबार' के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य–हम बच्चों की आवाज को बुलंद करना है और सृजनात्मक प्रतिभा को निखारना है। आप अपनी लिखी हुई कहानी, कविता, लघुकथा, चुटकुले। पहेली, चित्र, आपबीती, खेल, अखबार पर प्रतिक्रिया या रचनाएँ भेज सकते हैं। रचना के साथ अपना नाम, वर्ग, विद्यालय का पता, सम्पर्क नम्बर अवश्य ही भेजें। चुनी गई रचनाएँ अगले अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

–बाल सम्पादक मंडल

इस अंक के प्रतिभागी–
सौरभ, राहुल,सुधाकर, संजू, युवराज, सम्राट, युवराज सिंह, वैष्णवी, तरुण, रोशनी, प्रवीण, रोहित, पूजा
बाल सम्पादक– पवन, मनीष, मुनटुन, तुलसी, आकाश,घुघँरू, प्रियंतरा,अभिनंदन, आनंद
संपादक– ज्योति परिहार, निदेशक, बिहार बाल भवन, किलकारी पटना।
विशेष सहयोग– राजीव रंजन श्रीवास्तव
संयोजक– सुधीर कुमार
डिजाइन– विवेक
कार्यालय– बिहार बाल भवन सैदपुर , किलकारी, पटना–800004 (बिहार)

इस अंक के जवाब
- बुझो-बूझौवल :
- गिलहरी
- चिड़ियाँ
- चींटी
- मेंढ़क

माथापच्ची :
भैंस–3
गाय–12
बकरी–4
कुल–19

दूरभाष : 0612-3224919, 2661295 ई मेल : info@kilkaribihar.org ब्लॉग : kilkaribihar.blogspost.in फेसबुक : www.facebook.com/kilkaribihar यूट्यूब : www.youtube.com/kilkaribihar

★ बच्चों द्वारा रचित, संपादित एवं बच्चों के लिए बाल मासिक अखबार । इस अखबार में छपी हुई रचनाएँ बच्चों के व्यक्तिगत विचार हैं। बच्चों के लिए समर्पित ★